❑जूनौ काव्य

रणमल्ल छंद

श्रीधर व्यास

कवि परिचै

श्रीधर व्यास आदिकाळ रै वीर रसात्मक कवियां री पांत में सिरमौर कवि मानीजै। 'रणमल्ल छंद' आंरी अैतिहासिक, वीर रसात्मक खंडकाव्य री अमोलक रचना है। व्यास ब्राह्मणां रौ अेक उपवरग, उपाधि अर राजकीय पद मानीजै। 'रणमल्ल छंद' रै अलावा दूजी रचनावां में 'भागवत दसम स्कंध' (127 छंद), 'सप्तसती' (120 छंद) आद रौ उल्लेख मिळै। कवि श्रीधर व्यास रै जीवण परिचै अर रचना-संसार री घणी जाणकारी कोनी मिळै। इण सारू शोध री दरकार है। कवि प्राकृत, संस्कृत अर फारसी रै सागै अपभ्रंस रा चोखा जाणकार हा, जिणरी बानगी 'रणमल्ल छंद' रचना भरै। श्रीधर व्यास 'रणमल्ल छंद' रै पाण इतिहास में रणमल्ल राठौड़ नैं अेक सुभट, भड़-किंवाड़, कमधज अर वीरवर रै रूप में अमर कर दियौ। अनेक विद्वान श्रीधर व्यास नैं रणमल्ल रौ राजकवि मानै अर कई विद्वान उणनैं राज रै पुरोहित रै रूप में स्वीकारै। श्रीधर व्यास रौ परिचै काळ रै अंधारै कूवै में रैवतौ जे पूना डेकन कॉलेज रै सरकारी संग्रहालय मांय मौजूद पांडुलिपि में प्रतिलिपिकार उणरी पुष्पिका में 'श्रीधर व्यास कृत रणमल्ल छंद' नीं लिखतौ। राजस्थानी रै आदिकालीन वीर रसात्मक रचनावां में 'रणमल्ल छंद' खंडकाव्य आपरी महताऊ ठौड़ राखै।

पाठ परिचै

रणमल्ल आपरै बगत रौ सुभट अर भड़-किंवाड़ जोधा हौ। 'रणमल्ल छंद' में रणमल्ल रै ही वीरत्व रौ बखाण है। आथूणै भारत में उण वेळा री उथळ-पुथळ रौ साचौ चित्राम इण काव्य में मिळै। दिल्ली रौ तुगलक सुल्तान नासिरुद्दीन मुहम्मद शाह रा नियुक्त करचोड़ा सूबेदार जफरखां सन् 1398-99 में ईडर (गुजरात) माथै दूजी बार हमलौ करचौ। उण वेळा ईडर राव रणमल्ल राठौड़ अर जफरखां रै बीचाळै जकौ जुद्ध होयौ, कवि उणरौ इज सांगोपांग ढंग सूं ओजपूरण वरणाव करचौ है। इचरज भरचै ढंग सूं रणमल्ल परंपरागत सैली सूं जुद्ध कर खान सेना नैं धरासाही कर न्हाखी अर जीत रौ सेवरौ आपरै सिर बांध्यौ। उण बगत इण जीत रौ घणौ जबरौ असर पड़्यौ। रणमल्ल आपरै रण-कौसल सूं अनमी अर हिंदू संस्कृति नैं पोखण वाळा रावां-उमरावां मांय धरमांध अर जुलमी यवनां रै खिलाफ जुद्ध करण री हूंस जगाई। रणमल्ल आपरै बूकियां रै ताण उण बगत में केई जुल्मी यवन सासकां नैं धरासाही करचा।

'रणमल्ल छंद' छंद-संज्ञक काव्य परंपरा री पांत री आदिकालीन वीररसपरक अेक अैतिहासिक खंडकाव्य रचना है, जिण मांय रणमल्ल रौ जुद्ध-कौसल अर उणरौ सूरापण रौ घणौ ओजपूरण अर उछाव-उमाव सागै अद्‌भुत वरणन कवि श्रीधर व्यास करचौ है।

रणमल्ल छंद

।। दूहू ।।

साहस वसि सुरताण दळ, समुहरि जिम चमकंत।
तिम रणमल्लह रोस वसि, मूंछ सिहरि फुरकंत।।

।। सारसी ।।

फुरफरहि लंब अलंब अंबरि नेज निकर निरंनर।
भरभरहि भेरि भयंक भू कर भरळि भूरि भयंकर।
दड़दड़ी दड़दड़ कारि दड़वड़ देसि दिसि दिसि दड़वड़इ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।

।। दूहू ।।

साहस वसि सुलतान दळ समुहरि जिम दमकंत।
तिम तिम ईडर सिहर वरि, ढोल गहिर ढमकंत।।

।। सारसी ।।

ढम ढमइ ढम ढम कर ढूंकर ढोल ढोली जंगिया।
सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरस रसि समरंगिया।
कळकळहि काहल कोडि कलरवि कुमल कायर थरथरइ।
संचरइ सक सुरताण साहण साहसी सवि संगरइ।।

।। चुप्पइ ।।

रा असि सरिसु बाहु उठ भारिअ,
बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ।
मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ,
तु गयणंग (भ)णि भाण न उग्गइ।।
बिबहर भरि बुंबारव वज्जइ,
जळहर जिम सींगणि गुण गज्जइ।
बहु बलकाक करइ बाहुब्बळि,
धंधळि धड़ धरइ धरणी तळि।।
अरियण दारण! दीन अभयकर,
पंडरवेस थया निब्भय धर।
बंभण बाळ बंदि बहु किज्जइ,
धा कमधज्ज धार करि लिज्जइ।।

अबखा सबदां रा अरथ

तिम=ज्यूं ही। रोस=रीस। वसि=रै कारण। फुरकंत=फुरकण लागी। लंब=मोटी। अलंब=छोटी। अंबरि=आकास। नेज=ध्वजा। भेरि=जुद्ध में बाजण वाळौ वाद्य। दड़दड़ी=वाद्ययंत्र। देसि=देस। दिसि-दिसि=दसूं दिसावां। सुरतांण=सुलतान। दळ=सेना। जंगिया=जंगी। समुहरि=हरावळ, सेना रै सबसूं आगलौ भाग। समरंगिया=जुद्ध रा रसिया। काहल=जुद्ध-वाद्य। कळकळिया=काहल सूं निकळ्योड़ी ध्वनि। थरथरइ=कांपणौ। रा=राजा, राव। असि=तलवार। बाहु=बाजू, बूकिया। मेच्छ=यवन, मुस्लिम आक्रमणकारी। पय=पग। लग्गइ=लागणौ। गयणगणि=आकास, गिगन, आभौ। भांण=सूरज। उग्गइ=ऊगणौ। बुल्लइ=बुलावणौ। हेजब=दूत। हक्कारिअ=संबोधन करणौ। बुंबारव=जुद्ध रौ अेक वाद्ययंत्र। भेरि=रण रौ वाद्ययंत्र, रणभेरी। जळहर=बादळ, मेघ। सींगणि=धनुसां री प्रत्यंचावां। बहु=घणा। बलकाक=यवन (बलक देस रा)। बाहूब्बळि=बाजू (बूकियां रौ जोर)। धरणी=धरती। अरियण दारण=सत्रुवां सूं मुक्त करणवाळा। दीन अभयकर=हे दीन अभयकारी, गरीब नैं भयमुक्त करण वाळौ। पंडरवेस=यवन। थया=होयग्या। निब्भय=भयमुक्त। बंमण=ब्राह्मण। बाळ=अबलावां। बहु=घणा। कमधज्ज=रणमल्ल, राठौड़ां री उपाधि। धार=जुद्ध।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'रणमल्ल छंद' रा कवि कुण है?

(अ) सालिभद्र सूरि (ब) समय सुंदर

(स) पृथ्वीराज राठौड़ (द) श्रीधर व्यास

( )

2. 'रणमल्ल छंद' किण काल री रचना है?

(अ) रीतिकाल (ब) भक्तिकाल

(स) आदिकाल (द) आधुनिककाल

( )

3. 'रणमल्ल छंद' री भासा किण भांत री है?

(अ) मालवी मिश्रित राजस्थानी (ब) व्यंग्यमूलक

(स) अपभ्रंस मिश्रित जूनी राजस्थानी (द) हिंदी मिश्रित राजस्थानी

( )

4. 'रणमल्ल छंद' काव्य रौ नायक कुण है?

(अ) दुर्गादास (ब) सातल सोम

(स) हमीर चौहान (द) रणमल्ल

( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. रणमल्ल किण सागै अर कद जुद्ध करयौ?
2. रणमल्ल छंद में आयोड़ा छंदां रा नांव लिखौ।

3. रणमल्ल री मूंछां किणनैं देखनै रीस सूं फुरकै ?
4. यवन सैनिक किणनैं बंदी बणावै ?

छोटा पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. धरती माथै कुण आतंक अर धूंध मचा राखी ही ? अर किण भांत ?
2. दूत रा वचन सुणनै रणमल्ल री कांई दसा होवै ?
3. दूत रै संदेसै रै जबाब में रणमल्ल कांई वचन बोलै ?

लेखरूप पड़ूत्तर वाळा सवाल

1. रणमल्ल छंद री काव्यगत विसेसतावां लिखौ।
2. रणमल्ल छंद में छंद अर अलंकारां री ओप माथै टीप लिखौ।
3. रणमल्ल छंद मांय रणमल्ल रौ अनमी सुभाव अर उण रा मायड़ भोम सारू विचारां नैं लिखौ।
4. रणमल्ल छंद रौ भावगत फूठरापौ उदाहरण सागै लिखौ।

नीचै दिरीज्या पद्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1 ढम ढमइ ढम ढम कर ढूंकर ढोल ढोली जंगिया।
सुर करहि रण सरणाइ समुहरि सरस रसि समरंगिया।।

2. रा असिसरिसु बाहु उठा भारिअ, बुल्लइ हठि हेजब हक्कारिअ।
मुझ सिर कमल मेच्छ पय लग्गइ, तु गयणंग (भ)णि भाण न उग्गइ।।

3. बिबहर भरि बुंबारव वज्जइ, जळहर जिम सींगणि गुण गज्जइ।
बहु बलकाक करइ बाहुब्बळि, धंधळि धड़ धरइ धरणी तळि।।